आत्मा ही हमारी मित्र है : युवाचार्य महाश्रमण

लाडनूं, 9 जून।

जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में युवाचार्य महाश्रमण ने शरीर के पांच प्रकारों में अंतिम एवं पांचवें शरीर कार्मण शरीर की चर्चा करते हुए कहा कि कार्मण वह शरीर है जो हमेशा संसार में जीवों के साथ रहता है, जीवनकाल के साथ-साथ मृत्यु के बाद भी रहता है। जब तक मुक्ति नहीं हो जाती है वह शरीर जीव का साथ नहीं छोड़ता है। शरीर छूट जाता है किंतु कार्मण शरीर सदा साथ रहता है।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि कार्मण शरीर हमें दिखाई नहीं देता है, आत्मा अगले जन्म में अकेली नहीं जाती कार्मण शरीर साथ में जाती है। कार्मण शरीर कर्मों से बना हुआ शरीर है कर्म मनुश्य के सुख-दुःख का फल देने वाला होते हैं, पुण्य-पाप के रूप में होते हैं। मनुश्य के भौतिक सुख-दुःख से, कर्म ही हेतु-भूत हैं।

जैन दर्शन के सिद्धांतों की चर्चा करते हुए युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि जैन सिद्धांत के अनुसार कोई भी ऐसी दूसरी परम शक्ति व्यक्ति को सुख-दुःख देने वाली ईश्वर के रूप में नहीं होती वह केवल आत्मा ही सुख-दुःख की कर्त्ता होती है। आत्मा ही हमारी मित्र है और आत्मा ही शत्रु होती है। जो भी हमें कष्ट होता है, उसकी जिम्मेवार हमारी आत्मा है।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि कार्मण शरीर में व्यक्ति इस रूप में ध्यान दे कि हम पांच शरीरों का बंध न करें और अच्छे आचरण करें ताकि पुराने पापकर्मों की निर्जरा हो सके पुण्य कर्मों का बंध हो ऐसी वांछा नहीं करनी चाहिए। पुण्य की इच्छा नहीं करनी चाहिए इच्छा निर्जरा की करनी चाहिए। जिस आदमी में विरक्ति का भाव पैदा होता है वह आत्मा के कल्याण पर ध्यान देता है। जब-जब आदमी माया में फंसा रहता है तब-तब वह संसार में रहता है और विभिन्न रूपों में पापकर्मों का बंध भी कर लेता है। मनुष्य आत्मा के बारे में ध्यान दे कि आत्मा अमर है परंतु वह कर्मों का बंध करती है। उसका फल भी उसे भोगना पड़ता है। पर आत्मा यहां से आगे भी कहीं जाने वाली है यह भी ध्यान देना चाहिए। शरीर का निर्माण कार्मण शरीर हमारा ज्ञान कितना विकसित होगा हमारी साधना कैसी रहेगी इन बातों का संबंध भी कार्मण शरीर के साथ होता है कार्मण शरीर की पुष्टी और कार्मण शरीर अपुश्टि भी इनका संबध आत्मा के साथ है। कार्मण शरीर को कमजोर बनाने का प्रयास करें तो एक समय ऐसा आ सकता है कि पूर्णतया कार्मण शरीर के बंधन से व्यक्ति सदा के लिए मुक्त हो सकता है।